04

UGC Approved
Refereed Journal
Jr.No.43053

Printing Area

International Multilingual Research Journal

Issue-32, Vol-06, August 2017

Indexed

APPROVED

IMPACT 4.002 FACTOR

ISSN 2394-5303

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 4.002(IIJIF) | Printing Area International Research journal | August 2017 Issue-32, Vol-06 | 08

27) श्री संत तुकाराम महाराजांच्या प्रभावळीचे वारकरी संप्रदायातील स्थान व महत्व
प्रा. डॉ. शेटे देविदास मल्हारी, जि. अहमदनगर || 122

28) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ० मंजूषा अवस्थी, लखनऊ || 125

29) ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन मे गैर–सरकारी संगठन की भूमिका
डॉ. आयशा अहमद–डॉ. महेन्द्र शर्मा, दुर्ग (छ.ग.) || 130

30) वेदों के अर्थबोध में आचार्य यास्क का योगदान
पुष्पलता, मुज़फ्फरनगर || 132

31) रंगभूमि उपन्यास:औद्योगिक समस्या एवं सामाजिक संघर्ष
डॉ. जुगल किशोर कुजूर, जिला–सरगुजा छ०ग० || 138

32) डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की ग़ज़लों में अभिव्यक्त रिश्तों की घूटन
प्रा. भगवान बाबूराव भालेराव, जिला जलगाँव (महाराष्ट्र) || 143

33) नई सदी के साहित्य में शरणार्थी विमर्श
नीता दौलतकर, धारवाड || 147

34) मानवतावादी दृष्टिकोण और भारतरत्न-डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर
डॉ. आर. के. जाधव, जिला धुलियाँ (महाराष्ट्र) || 149

35) हिंदी साहित्य में नारी विमर्श
प्रा. संजय प्रल्हाद महाजन, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र) || 151

36) हिंदी भाषा का महत्व:वैश्वीकरण के विशेष परिप्रेक्ष्य में
डॉ. मनोहर हिलाल पाटील, जि. नंदूरबार (महाराष्ट्र) || 154

37) डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में व्यक्त सामाजिक चिंतन
प्रा. डॉ. महेंद्र जयपालसिंह रघुवंशी, नंदुरबार (महाराष्ट्र) || 158

38) समकालीन ग़ज़लकार कुँअर बहादुर सक्सेना की ग़ज़लों में सामाजिक संवेदना
डॉ. संजय विक्रम ढोडरे, धुले, ता. जि.-धुले || 160

39) हिन्दी दलित आत्मकथा लेखन:एक विमर्श
डॉ० सियाराम, औरैया (उ० प्र०)। || 163

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Seth R.C.S. Arts & Commerce College Bhatisgarh

Principal
Seth R.C.S. Arts & Comm. College
DURG (C.G.)

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 4.002(IIJIF) | Printing Area International Research journal | August 2017 Issue-32, Vol-06 | 0130

29

ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन मे गैर–सरकारी संगठन की भूमिका

डॉ. आयशा अहमद
सहा. प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. महेन्द्र शर्मा
सहा. प्राध्यापक
सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

****

प्रस्तावना:–

विकास के बदलते परिदृश्य से स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका बढ़ती ही जा रही है, पिछले कुछ दशको में तो संस्थाओं की संख्या में न सिर्फ तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है, बल्कि सेवा व विकास के उन सभी क्षेत्रों तक इनके कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ है जो अब तक इन संस्थाओं के लिए कमोवेश अछूते ही रहे थे। सरकार के साथ उनके कार्यक्रमों में सहभगिता निभाने की दिशा में भी संस्थाऐं नई उर्जा के साथ सामने आयी है और दोनों के बीच अपने अपने विषयों पर विशेषता बढ़ाने का चलन सामने आने लगा है। देश की अधिकतम जनसंख्या गांवों में निवास करती है इसलिए भारत को गांवों का देश कहा गया है। भारत को विकसित देश बनाने के लिए गांवों का विकास करना आवश्यक है। प्राचीन समय से लेकर भारत की आजादी तक गांव के विकास के लिए कुछ छोटे–मोटे प्रयास किए गए परन्तु ठोस नीति एवं व्यवस्थित ढंग से न होने के कारण लोगों को इन प्रयासों का ज्यादा लाभ नहीं मिल सका। आजादी से पहले महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, आदि अनेक समाज सेवियों ने ग्रामीण विकास के लिए स्थानीय लोगों के साथ मिलकर कुछ प्रयास किए है परन्तु सीमित क्षेत्र में होने के कारण ज्यादा लोगों का इसका फायदा नही मिला।

विकास योजनाओ में सरकारी तंत्र की भूमिका:–

नियोजित विकास के प्रारंभ से ही समाजवादी दर्शन के अनुरूप विकास कार्यक्रमों के नियोजन और संचालन का दायित्व मुख्य रूप से सरकारी तंत्र यानी नौकरशाही को सौपा गया है। लगभग चार दशक के अनुभव के बाद यह महसूस किया जाने लगा है कि जनसाधारण की भागीदारी के बिना स्थानीय संसाधनों का उपयोग अच्छी तरह से नहीं किया जा सकता है और ना ही जनसाधारण की भागीदारी को प्रमुख अंग मानती रही है, परन्तु पंचायती राज्य व्यवस्था में अधिकार न मिलने एवं जानकारी के अभाव के कारण स्थानीय लोगों के विकास में कुछ हद तक ही सफल रही है, ७३ वें व ७४ वें संविधान संशोधन का मुख्य कारण व उद्देश्य समाज के हर वर्ग को प्रतिनिधित्व देने का रहा है। देश में इन संगठनों के इतिहास पर नजर डालें तो विदित होता है कि प्राचीन काल से ही स्वैच्छिक कार्य और समाज सेवा की गौरवशाली परम्परा रही है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि परोपकार, गरीबों, दुखीजनों की सेवा और जरूरतमंदों की सहायता भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है और समाज में धर्म–कर्म की भाषा में इसे पुण्य की संज्ञा दी गई है। आजादी के बाद देश में मुख्य सबसे बड़ी समस्या गांवों में आधारभूत सुविधाओं की कमी तथा गरीबी है। अधिकांश योजनाओं एवं कार्यक्रमों की सफलता का प्रमुख कारण यही रहा है कि योजनाओं एवं कार्यक्रमों को बनाते समय वहां के स्थानीय लोगों के समस्या एवं उनकी रूचि व भागीदारी की अनदेखी की गई है, अधिकतर योजनाओं एवं कार्यक्रमों का लक्ष्य पूरा न करने का प्रमुख कारण लोगों को इनकी जानकारी का अभाव एवं अधिकारियों की उदासीनता रही है।

Principal
Seth R.C.S. Arts & Comm. College
DURG (C.G.)

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 4.002(IIJIF) | Printing Area International Research journal | August 2017 Issue-32, Vol-06 | 0131

देश के अलग अलग क्षेत्रों के विकास के लिए क्षेत्र आधारित योजनाएं तथा विभिन्न प्रकार के लक्ष्य समूह आधारित कार्यक्रम चलाए जाते रहे है, हालांकि आजादी के बाद गांवों की तस्वीर काफी हद तक बदली है, शिक्षा स्वास्थ्य, संचार, सड़क सुविधाओं का विकास हुआ है, परन्तु जो लक्ष्य एक निश्चित अवधि में प्राप्त होने चाहिए थे, हम उसमें सफल नहीं हुए है।

विकास में गैर सरकारी संगठनो की भूमिका–

गैर सरकारी संगठन स्थानी लोगों के साथ ही मिलकर बनते हैं, वे अपनी स्थानीय समस्याओं को हल कराने के लिए प्रयासरत रहते है। गॉव में साक्षरता का अभाव एवं गरीबी के कारण लोग सरकार की योजनाओं एवं ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों में रूचि नहीं लेते है। योजनाओं को ठीक ढंग से लागू करवाने, उन्हें तथा गरीबों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए व्यापक नेटवर्क की आवश्यकता पड़ती है, गैर सरकारी संगठन इस लक्ष्य को प्राप्त करने में व्यापक भूमिका निभा सकते है। गैर सरकारी संगठन सुदुर क्षेत्रो में स्वास्थ्य, शिक्षा, जल, पर्यावरण, मानवाधिकार, बाल अधिकार, नि:शक्तता आदि जैसे अनेक क्षेत्रो में विकास कार्य कर रहे है। भारत में लगभग ३३ लाख गैर सरकारी संगठन पंजीकृत है जो दूर दराज के क्षेत्रो जमीनी स्तर अर्थात जनसाधरण के लिए काम करते है। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से सरकार गांवों में ग्रामीण गरीबी उन्मूलन के माध्यम से गरीबी दूर करना तथा हर प्रकार की बुनियादी सुविधाओ (शिक्षा, स्वास्थ, आवास, पानी) के लिए प्रयास करती रही है। ग्रामीण विकास एवं गरीबी निवारण परियोजनाओं में गैर सरकारी संगठन अधिक कुशलता से कार्य कर सकते है, क्योंकि इनक कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर, पर सरकारी तंत्र की कमी देखी गई है। आज कई गैर–सरकारी संगठनों ने कई क्षेत्रों में लोगों की भागीदारी से ऐसे कार्य किये जो सरकारी प्रयासों के ५० वर्ष बाद भी हासिल नहीं किये हैं। इसके अलावा एड्स जैसी बीमारी पर भी विदेशी व देशी सहायता से अनेक गैर–सरकारी संगठन कार्य कर रहे हैं। आज भी गरीबी, बाल शिक्षा, बाल मजदूरी, उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, महिला साक्षरता, लिंग अनुपात, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार, एड्स जैसी अनेक समस्याएँ है जो कि गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से ही काफी हद तक दूर हो सकती है।

गैर सरकारी संगठन एवं गरीबी उन्मूलन

केन्द्र एवं राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रो में व्याप्त गरीबी की समस्या पर विचार करते हुये इस संदर्भ में स्वरोजगार के कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया गया क्योंकि यह कार्यक्रम ही गरीबी दूर करने एवं आय बढ़ाने तथा अच्छा जीवन धारण करने योग्य स्थाई आधार बनाता है और इन सामाजिक समस्याओं से संबंधित विषय को ध्यान में रखकर समय–समय पर अनेक योजनाएँ संचालित की जाती रही है। इसलिए केन्द्र एवं राज्य सरकार ने विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से स्वरोजगार कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया। ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे अधिक गरीबों की संख्या देखी गई है और ग्रामीण लोग आज के दौर की विभिन्न सुख–सुविधाओं एवं सभ्यता से परे है, इसी कारण गांवों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है। शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु गैर सरकारी संगठनो का सहारा लिया जाता है क्योकि वे स्थानीय लोगो के करीब एवं उनकी समस्याओ से भली–भॉति परिचित होते है। जिसके कारण गरीबी उन्मूलन तथा ग्रामीण विकास से संबंधित योजनाओं का सफल क्रियान्वयन हेतु गैर सरकारी संगठनो को दायित्व दे दिया जाता है।

निष्कर्ष :

आज सामाजिक, आर्थिक जीवन से जुड़ी कोई समस्या नहीं है, जिसमें गैर–सरकारी संगठन काम नहीं कर रहे हो, विशेषकर ग्रामीण विकास, पर्यावरण संरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण एवं जनचेतना जागरण कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्र है जहां इनकी उपलब्धियाँ सरकारी क्षेत्र से कहीं अधिक है। चूंकि ये संगठन जनसहयोग, जन सहभागिता, जन सम्पर्क पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए लोगों के बीच

Principal
Seth R.C.S. Arts & Comm
College Durg (C.G.)

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 4.002(IIJIF) | Printing Area International Research Journal | August 2017 Issue-32, Vol-06 | 0132

रहकर कार्य करते है, इसलिए इनकी पहुंच और विश्वसनीयता आम लोगों में सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अपेक्षा अधिक है। एक दूसरी विशेषता इनकी कार्यविधि एवं कार्यनीति में लचीलापन एवं तीव्र निर्णय की प्रक्रिया है। अधिक स्वतंत्र होने के कारण ये संगठन नए कार्यक्रमों के प्रयोग एवं परीक्षणों के लिए अधिक योग्य एवं सक्षम है। इन संगठनों को अधिक से अधिक दायित्व और अवसर उपलब्ध कराकर विशेष रूप से ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ:—

१. यादव सुबह सिंह (१९९१)—ग्रामीण विकास एवं अर्थव्यवस्था रावत पब्लिकेशन्स जवाहर नगर जयपुर। पृ.२३—२४

२. कटारिया सुरेन्द्र (२००३)—ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज, आर.बी. एस. ए. पब्लिकेशन्न जयपुर। पृ.१४

३. सिंह राजेन्द्र (१९८९)—भारतीय अर्थव्यवस्था में गरीबी उन्मूलन की समस्याएं राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली। पृ.३२

४. १९९९, जमुआर रविशंकर (१९९४)—समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, एक सिंहावलोकन, कुरूक्षेत्र। पृ.१८

५. जय सिंह विशेष (२००७) आर्थिक क्षेत्र ग्रामीण विकास में सहायक ग्रामीण विकास मंत्रालय कुरू क्षेत्र पृ.१२।

❑❑❑

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
प्रिंटिंग एरिया
Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

30

वेदों के अर्थबोध में आचार्य यास्क का योगदान

पुष्पलता
एस०डी०पी०जी०कॉलिज, मुज़फ्फरनगर

****

भारतीय हिन्दूधर्म और उसकी संस्कृति के मूलाधार ग्रन्थ 'वेद' ही हैं। विश्व का सर्वप्रथम वाङ्मय 'वेद' ही हैं। मानव सृष्टि के पूर्व परमेश्वर ने उनके कल्याणार्थ 'वेद' का आविष्कार किया। अतएव 'वेद्' को अनादि और 'अपौरुषेय' कहा जाता है।

वेद का अर्थ— वेद ऋषि विद् धातु (विद ज्ञाने) से घञ् (अ) प्रत्यय करने पर बनता है। इसका अर्थ है ज्ञान। अतएव वेद ऋषि का अर्थ है—ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह—ग्रन्थ। प्राचीन ऋषियों ने जो ज्ञान अर्जित किया था, उसका संग्रह वेदों में है। वेद और विद्या दोनों ऋषि विद् धातु से बने हैं और वेद ऋषि का प्राचीन साहित्य में विद्या अर्थ में प्रयोग भी हुआ है, अत: प्राचीन समस्त विद्याओं को वेद (ज्ञान) ऋषि के अन्तर्गत लिया जाता था। इसी आधार पर आयुर्वेद, धनुर्वेद आदि उपवेद माने जाते हैं। सायण ने वेद ऋषि की दूसरी व्याख्या भी की है:—

इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयतिस वेद:।

जो ग्रन्थ इष्ट—प्राप्ति और अनिष्ट—निवारण का अलौकिक उपाय बताता है उसे वेद कहते हैं। दूसरे ऋषियों में यह कहा जा सकता है कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है? यह वेद ही बताता है। 'वेद्यन्ते ज्ञाप्यन्ते धर्मादिपुरुषार्थचतुष्टयोपाया येन स वेद:' —अर्थात् धर्मादि चार पुरुषार्थो की प्राप्ति के उपाय जिसके द्वारा बताये जाते हैं, उसे 'वेद' कहते हैं।

वेदों को 'श्रुति' भी कहते हैं। इसका कारण यह है कि इन्हें गुरु—शिष्य—परम्परा से ही सुरक्षित रखा गया था। गुरु परम्परागत पद्धति से वेदों के मन्त्रों को शिष्यों को पढ़ाते थे और शिष्य उनको श्रवण—मात्र

Seth R.C.S. Arts & Comm. DURG Chhattisgarh
Principal
Seth R.C.S. Arts & Comm
College Durg (C.G.)